किस्मत का धनी धन्ना

प्रतिष्ठानपुर में धनसार नाम का एक धनी व्यापारी रहता था। उसके तीन पुत्र थे। धनदत्त, धनदेव और धनचन्द्र।

पहला धनदत्त ईर्ष्यालु.....

धनदेव लोभी और.....

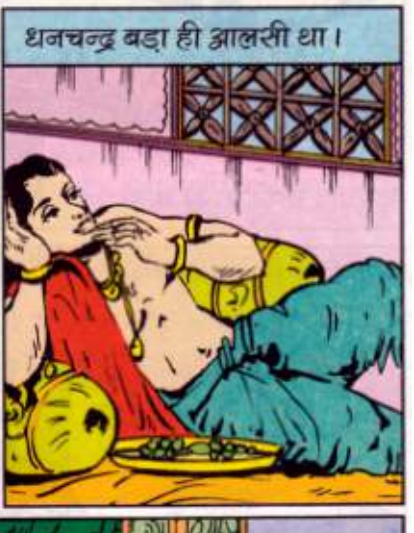

धनचन्द्र बड़ा ही आलसी था।

एक दिन पूनम की रात सेठानी ने चौथे पुत्र को जन्म दिया—

सेठ धनसार स्वयं सन्तान की नाल गाड़ने के लिए अपने घर के पीछे बाड़े में गया और गड्ढा खोदा।

अरे, सोने की मोहरों से भरा कलश!

वह मोहरों से भरा कलश चुपचाप अपने घर ले आया।

उसने सेठानी से कहा—

देखो, इस पुण्यशाली पुत्र का जन्म होते ही घर में धन सम्पत्ति का ढेर लग गया है। इसलिए इसका नाम धनकुमार रखेंगे।

प्यार से हम इसे धन्ना कहेंगे।

धन्ना दूज के चाँद की तरह बड़ा होने लगा।

एक दिन धन्ना अपने पिता के साथ दुकान पर बैठा था। तभी एक व्यक्ति दुकान पर आया—

सेठजी, मेरे पास एक रत्न है। उसे बेचना चाहता हूँ।

दिखाओ भाई! कौन-सा रत्न है।

रत्न में से निकलती किरणें देखकर धन्ना ने कहा—

पिताजी, यह तो सूर्यकान्त रत्न है। इसे रखने वाले के यहाँ धन समृद्धि की अपार वृद्धि होगी।

सेठ ने मुँह माँगी कीमत देकर रत्न खरीद लिया।

घर आकर सेठ ने तीनों पुत्रों के सामने धन्ना की प्रशंसा की–
देखो, धन्ना तुम सबसे छोटा है फिर भी कितना समझदार और चतुर है, और एक तुम हो निरे काठ के उल्लू।

तीनों भाई धन्ना की प्रशंसा सुनकर जल उठे।
पिताजी! हम दिनभर इतनी मेहनत करते हैं; सुबह से रात तक दुकान पर बैठते हैं। धन्ना तो आज तक एक कौड़ी कमाकर नहीं लाया।

फिर भी आप इसी की प्रशंसा करते हैं। यह हमसे बर्दाश्त नहीं होता। चाहो तो परीक्षा लेकर देख लो, पता चल जायेगा। कौन कितने पानी में है?

सेठ बोला–
ठीक है! आज यही सही। मैं तुम चारों भाइयों को तीन-तीन सौ स्वर्ण-मुद्रायें देता हूँ, नगर में जाओ, और इससे कमाकर अपने पूरे परिवार को एक समय का भोजन कराओ।